संदर्भ सूचि

	लेखक	ग्रंथ	पृष्ठ क्रमांक
१	भगिरथ मिश्र	काव्यशास्त्र	८९ ।
२	यशपाल	अमिता	९२ ।
३	वही	वही	८६ ।
४	वही	वही	८८ ।

सप्तम अध्याय

'अमिता' उपन्यास का उद्देश्य --

उपन्यास का प्रमुख संगठन तत्व उद्देश्य होता है। कुछ लोक केवल मनोरंजन के लिए उपन्यास पढते हैं। यह तथ्य होने पर भी उपन्यास केवल मनोरंजन के लिए लिखा जाता है यह तथ्य नहीं। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्राय: सभी उपन्यासों के पिछे कोई न कोई विशिष्ठ उद्देश्य या जीवन के प्रति विशिष्ठ दृष्टिकोन मिलता है। विषय क्षेत्र के विकास के साथ-साथ उद्देश्य में भी वैविध्य आया है। अब उपन्यास केवल मनोरंजन अथवा उपदेशात्मकता के लिए नहीं लिखे जाते। मानव जीवन के विविध परिवेशों की प्राय: सभी संभाव्य समस्याएँ उपन्यास में उठायी जाती है उनपर चिन्तन किया जाता है।

एक युग और समाज के जीवन के चित्रण द्वारा वर्तमान युग और समाज के जीवन को प्रेरणा देने का काम भी उपन्यास का है। एक साथ पूरे जीवन की झाकियाँ देकर मानव जीवन का ज्ञान प्राप्त करके हम अपने दैनिक जीवन में सामंजस्य और सफलता प्राप्त कर सकते हैं। कभी कभी दैनिक जीवन की चिन्तागृस्त अवस्था से उबकर एक नवीन वातावरण में प्रवेश कर शांती प्राप्त करते हैं। इस प्रकार उपन्यास का उद्देश्य बहुमुखी होता है।

हमारा राष्ट्र अपने जीवन की अवस्था सुधारने का प्रयत्न कर रहा है। राष्ट्र को विश्व शांति का संदेश देना इतनाही यशपाल जी के इस उपन्यास का उद्देश्य है। डॉ.मृलिका त्रिवेदीजी ने कहा है --

"अमिता' अनीति के सामने नीति की बुध्दिपक्षा के सामने हृदय पक्षा, की विजय ही विश्व-शांति का संदेश है।" [१]

` अमिता` का उद्देश्य कलिंग-विजय की ऐतिहासिक घटना की याद दिलाना मात्र नहीं । ` अमिता ` में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के माध्यम से समसामयिक समस्याओंको सुलझाने का प्रयत्न किया गया है । वर्तमान में समाज के सामने प्रमुख समस्या विश्व-शांति की है । यह समस्या हिंसा,युध्दों और सैन्य-बल बढाने जाने से नहीं सुलझाई जा सकती । क्रांतिकारी यशपाल जी क्रांति का चरम उद्देश्य निर्माण को ही समझते हैं । मानव-मात्र की स्वतन्त्रता और आत्मनिर्णय का अधिकार ही उनके विचार में शांति और विश्व-शांति के लिए आवश्यक है ।` अमिता` में प्रसिध्द ऐतिहासिक घटना,अशोक की कलिंग-विजय के माध्यम से यही व्यंजित किया गया है ।

यशपाल ने ` अमिता` की रचना का उद्देश्य विश्व-शांति के प्रयत्नों में सहयोग देना और युध्दों की व्यर्थता की ओर ध्यान दिलाना बताया है । कहानी में युध्द-विरोधी राजमाता को सफलता नहीं मिलती । पाठकों की बौध्दिक सहानुभूति भी राजमाता की अपेक्षा युध्द के समर्थक महामात्य की ओर होती है । इस प्रकार रचना के आंतरिक उद्देश्य में अन्तविरोध आ गया है ।

युध्दों और विश्व-अशांति का कारण आत्मरक्षा और आत्म-निर्णय के अधिकार को रक्षा करना नहीं माना जा सकता । उसका कारण तो दूसरों से छिनने की दूसरों को डराने की और दूसरों को मारने की प्रवृत्ति माननी होगी,या दूसरों को परास्त करने की प्रवृत्ति को ही अपनी स्वतंत्रता स्वत्व और आत्म - निर्णय के अधिकार की रक्षा के लिए तत्पर रहने का भाव उपन्यास का आनुषंगिक उद्देश्य माना जा सकता है, परन्तु वह विश्व-शांति का विरोधी नहीं । विश्व - शांति से इसी उद्देश्य की तो रक्षा होगी ।

यशपाल ने अमिता की विजय द्वारा दूसरों से छीनने,दूसरों को डराने और दूसरों को मारने अर्थात युध्द के कारण उपस्थित करने की प्रवृत्ति की त्याज्य बताया है । लेखक उपन्यास के आरंभ से ही इस सूत्र को लेकर चला है और निश्चय ही उसे उत्कृष्ठ कलात्मकता के साथ निभाया भी है ।

`अमिता` इतिहास नहीं मुख्यत: कल्पना है। यशपाल ने आधार-रूप में केवल अशोक के कलिंग विजय' को ही लिया है। शेष समस्त कथानक उनकी सशक्त सजीव कल्पना से निर्मित है।` किसी से छिनों मत, किसीको डराना मत, किसी को मारना मत।` उपन्यास का यह महामंत्र कभी अमिता के मुख से कभी स्वयं अशोक द्वारा भी प्रतिध्वनित होता है। यह मंत्र उपन्यासके प्रारंभ से अंततक दिखाई देता है। लेखक उसे दोहरादोहराकर तृप्त नहीं होता। उपन्यासकार इस मंत्र की घोषणा से ही संतुष्ठ नहीं हो जाता वह उसे सफल भी प्रस्तुत कर देता है।

यशपाल `अमिता` में `दादा कामरेड` और `पार्टी कामरेड` की यथार्थ की धरती से उठकर आदर्श की ओर संकेत करते जान पड़ते हैं। इस रचना में रोमांटिक तत्व का भी एकदम अभाव नहीं है। हिंसा और मोद का `रोमांस` दासता में जकड़े मनुष्य की विवशता भी स्पष्ट करता है। बौध्द श्रमणों के चित्र तथा बौध्दकालीन परिस्थिति के सजीव चित्र, ऐतिहासिक ज्ञान से पुष्ठ कल्पना के द्वारा निर्मित है, परन्तु कल्पना के बलपर बिना किसी आधार के प्रासादों के यथार्थ वातावरण का निर्माण लेखक की सफलता का द्योतक है। यह ठिक है कि नन्हीं बालिका की भोली चपलता उपन्यास का प्राण है परन्तु उस बाल सुलभ चापल्या का उपयोग अपने उद्देश्य के लिए लेखक सफलता से कर पाया है। अमिता मनोविज्ञान दिखाई देता है।

यशपाल जी पर असहिष्णुता और यौन-रोमांस की प्रधानता देने का आरोप लगाया जाता है किन्तु यह आरोप यशपाल जी ने `अमिता` से धुलवा दिया है। इस रचना में उनकी दृष्टि कितनी व्यापक, उद्देश्य कितना मानवीय और आधारफलक कितना, विशाल है।` अमिता` को एक भोली बालिका के गुड़ियों के खेल की कहानी मात्र कहकर अमिता का तिरस्कार नहीं किया जाता। तुलनात्मक दृष्टिसे देखा गया तो `दिव्या` अपने आपमें अधिक कलात्मक और प्राणवान, समस्यामूलक और रागात्मक, अनुभूतिपूर्ण अमर कृति है।` अमिता` का `मानवतावाद` तथा बालिका अमिता की सार्थक क्रीडाएँ और निर्विकार स्वच्छ

हृदय भी सहृदय को एक बार पकड़कर छोड नहीं सकता । अमिता में बालहठ अधिक दिखाई देता है । शुद्ध विश्लेषण के लिए हम दिव्या को बौध्दिक और अमिता को भावनात्मक रचना कह सकते है । संघर्ष के पथ पर उत्तरोत्तर विकास करती हुई मानवता इस युग में उस मंजिलपर पहुँच गई है जब उसे परस्पर संघर्ष न करके केवल प्रकृति को ही जीतने का संघर्ष करना चाहिए । इसी व्यवस्था को विश्व-शांति और आन्तरराष्ट्रीय सहयोग का नाम दिया जाता है । ` अमिता ` इस लक्ष्य के लिए कलात्मक उद्बोधन करने के कारण और अमर बाल सरलता का रूप धारण करके अमर रचना बनी रहेगी ।

इसी प्रकार यशपाल की ` अमिता ` भी विश्व-शांति की अनिवार्यता को समझ रखकर लिखी गई है । युध्द की विध्वंसकता मानवता का कलंक है ।

निष्कर्ष --

` अमिता ` उपन्यास एक ऐतिहासिक उपन्यास है । इस उपन्यास का कथानक एक ऐतिहासिक कल्पना मात्र है ।

इसमें दास प्रथा, राजशाही वातावरण और बालिका अमिता का हठ का दर्शन होता है । ` अमिता ` उपन्यास में लेखक ने ` अमिता ` के द्वारा विश्व-शांति का संदेश दिया है । जो सवाल युध्द से नहीं छूटता वह सवाल एक लडकी के महामन्त्र से छूटता है । उपन्यास के प्रारंभ से अंततक एक मंत्र है वह है --

` किसी से छिनना मत, किसीको डराना मत, किसीको मारना मत । `

इस मंत्र से उपन्यास के कथानक में मौलिकता आती है । ` अमिता ` , ` दिव्या ` की भाँति श्रेष्ठ रचना है । एक बालिका राजरानी बनती है यह एक विशेषता है । बालकोंके भी विचार श्रेष्ठ होते है यह सिख हमें ` अमिता ` उपन्यास से मिलती है ।

इस प्रकार मनोरंजन और समाज हित इन दोनों दृष्टियों से उपन्यास का उद्देश्य सफल है ।